जब खुद नहीं था

कवि प्रकाशन, बीकानेर

जब खुद नहीं था

नवीन सागर



कवि प्रकाशन
डी-2, मुरलीधर व्यास नगर
बीकानेर 334004

ISBN 81 86436 31 6

प्रथम संस्करण 2001
मूल्य नब्बे रुपये
आवरण राजुला शाह
मुद्रक सांखला प्रिन्टर्स
सुगन निवास, चन्दनसागर, बीकानेर 334001

Jab Khud Nahin Tha (Poems) by Naveen Sagar Rs 90/

प्रिय टीकू (शपा शाह)
के लिए

शेष जो बचा रहा

जब हम लोग—यानी मैं और नवीन मिलकर 'जब खुद नहीं था' कविता-संग्रह बना रहे थे तो कविताओ के चुनाव से लगाकर आवरण तक मिलकर बनाया था। 'जब खुद नहीं था' की इस हस्तलिखित प्रति मे नवीन के हाथ से लिखी 34 कविताएँ 51 पृष्ठो में फैली हैं। फ्लैप मैटर, परिचय, अनुक्रम, समर्पण, प्रकाशन तक के सारे ब्योरे अपनी-अपनी जगह दर्ज किए गए थे।

इस संग्रह की इन कविताओ के अलावा संग्रह के लिए आवश्यक कविताओं का चुनाव करने, उन्हें टाइप कराने आदि का काम ज्योत्स्ना मिलन ने करना स्वीकार किया, इस बात की मुझे प्रसन्नता है।

मैंने सपने में भी कभी नहीं सोचा था कि मुझे नवीन के कविता-संग्रह की भूमिका लिखनी पडेगी। कुछ भी लिखो, दो वाक्य ही सही। वे दो वाक्य क्या हो सकते हैं या होने चाहिए—कुछ समझ में नहीं आ रहा। यों भी थोडी-सी कविताएँ लिखने के अलावा मैंने शायद ही कुछ लिखा होगा।

क्या लिखूँ, समझ नहीं पा रही हूँ। दिमाग एकदम खाली-सा हो गया है, कुछ भी सोच नहीं पाती।

कविताएँ वे लिखते रहते थे लगातार और लिखे जाने पर—मैं घर मे जहाँ-कहीं होती पहुँच जाते, अपने कागजों समेत, चाहे उस वक्त मैं रसोई में खाना पका रही होऊँ, कमरा झाड रही होऊँ, कपडे तहा रही होऊँ, समय कोई-सा भी हो, जगह कोई-सी भी हो, फर्क न पडता। यहाँ तक कि रात सो रही होऊँ और कविता आधी रात पूरी हुई हो तो सवेरे तक का सब्र न होता, जगाकर सुनाते, 'यार छाया, ये कविताएँ तो सुन लो।'

बचपन मे साहित्य से कविता मे कोई ऐसा वास्ता नहीं रहा। नवीन कविताए लिखते थे और लिखकर सबसे पहले मुझे सुनाते थे शुरू मे। और इस विश्वास के साथ सुनाते कि मुझे सबकुछ समझ मे आएगा। और सच मे मैं अचभित थी कि मुझे वह सब समझ में आ रहा था, अनुभव हो रहा था। अपनी कविताए तो सुनाते ही थे लेकिन जिस भी कवि की कविताएँ पढ़ रहे होते वे उन्हे अगर बहुत अच्छी लगतीं तो तत्काल उसी उत्साह से सुनाने पहुँच जाते। उन्हीं से सुनकर मैने हिन्दी के बहुत सारे कवियो को जाना।

चाहती तो मैं हू कि सग्रह जैसा उन्होने तैयार किया था बिलकुल वैसा ही छपे, कोई परिवर्तन न किया जाए। दूसरी तरफ यह भी नहीं सोच पाती कि नवीन सग्रह के प्रकाशन के समय क्या कुछ बदलना चाहते, कुछ घटाकर या कुछ बढाकर।

मित्रो की राय से नवीन के लिखे फ्लैप और परिचय को स्थान बदलकर इस भूमिका के साथ ही सही लेकिन मैं चाहती हूँ कि वह प्रकाशित हो—यह उनकी फितरत है।

टीकू (शपा शाह) के जन्मदिन-दो अप्रैल—पर बाजार से कुछ खरीदकर देने का विचार उनको बिलकुल नहीं जम रहा था। कुछ ऐसा देने की उनकी इच्छा थी जो वही दे सकते हों। इसके लिए नवीन ने अपनी कविताओं का चयन-सग्रह-कर उसे-दो अप्रैल-नाम दिया और खुद ही उसका फ्लैप और अपना परिचय भी लिखा। उनकी इसी इच्छा में से 'जब खुद नहीं था' सग्रह का जन्म हुआ और हम उसको बनाने मे जुट गए। यह सग्रह आपके हाथों मे सौंपते हुए मन में अपनी पसद की इन कविताओ में आपके साझे की कामना है।

इस सग्रह के प्रकाशन को सभव बनाने के लिए मैं श्री अनिरुद्ध उमट तथा भाई गिरधरजी की हृदय से आभारी हूँ।

छाया सागर

नवीन सागर का मध्यप्रदेश के शहर सागर मे बाकायदा जन्म हुआ। वही के विश्वविद्यालय मे पढ़ते हुए उन्होने शेरो-शाइरी से अपनी साहित्यिक यात्रा शुरू की और आज वे साहित्य मे कही न होते हुए भी मध्यप्रदेश मे नौकरी कर रहे है उनकी उम्र का खुलासा यहा जान-बूझकर नहीं किया जा रहा है, इससे निराशा फैलने का अदेशा है। उनकी सेहत अच्छी है और वे बहुत सारे लोगो से उम्र मे बडे और बहुतो से उम्र मे छोटे है। उनका एक कहानी सग्रह 'उसका स्कूल' सभावना प्रकाशन से प्रकाशित होकर बुरी तरह पिट चुका है। बच्चो की कविताओ की उनकी पुस्तक 'आसमान भी दग' को लोग उसकी साज-सज्जा के कारण सराहते है। इनका एक कविता-सग्रह 'नीद से लम्बी रात' आधार प्रकाशन से निकला है और अब यह सग्रह प्रस्तुत है। इनका पता नीचे दिया जा रहा है ताकि सग्रह की तारीफ मे लिखा अपना पत्र पोस्ट करने मे आपको दिक्कत पेश न आए।

—नवीन सागर

राज्यवादी उत्कृष्टतावादी और मार्क्सवादी तथा वे तमाम वादी-प्रतिवादी जो कविता की बरबादी के लिए जिम्मेदार हैं, उन्हें यह सग्रह अच्छा नहीं लगेगा, और यही इस सग्रह के अच्छा होने का सबूत होगा। अपनी कविताओ की प्रशसा नही करनी चाहिए लेकिन यह सवाल भी तो उठता है कि क्यो नहीं करनी चाहिए ? यह सग्रह आपको सौपते हुए मै यकीन के साथ कह रहा हूँ कि कविताए आपको अच्छी लगेगी और यदि अच्छी न लगे तो आपको अपने बारे मे गहराई से सोचने की पूरी आजादी है। अगर आप कहेगे कि मै अहकारी हूँ तो मै आपके कहे का कोई और मतलब निकाल कर खुश रहूँगा।

यह बात मै छिपाना नही चाहता कि यह ब्लर्ब और अपना जीवन परिचय मैंने एक अप्रैल को लिखा है।

नवीन सागर

इतना अकेला कि जितनी अकेली सृष्टि है

रात के बाद फिर दूसरी, फिर तीसरी रात । ..रातों का हहराता, अन्तहीन समुद्र, जिसके आलोक को चीन्हने, बेधने को विवश एक अकेली, अकिंचन उपस्थिति। प्रलय की तमाम गणितीय भविष्यवाणियों से बहुत पहले आया यह प्रलय, जो परोक्षत केवल एक जीवन को डुबाता है पर इस एक जीवन के साथ डूबती है समूची सृष्टि। बल्कि यू कहें कि जलमग्न हो चुकी सृष्टि पर छाई रात केवल कवि की आखों में 'सुबह का सपना देखती है'। उसे सुनाई देती है 'यह सम्पूर्ण की खामोशी'। सुनता है वह 'असभव शहर में' रात का 'घण्टो की तरह' बजना।

यह महज सयोग नहीं कि कवि के पहले कविता-सग्रह का नाम 'नींद से लम्बी रात' था। इस सग्रह की भी लगभग हर कविता रात के असख्य रगों-रूपाकारो-ध्वनियो से ही बनी है। हिन्दी मे शायद अपनी तरह का यह अकेला कवि होगा जिसने दरअसल केवल मृत्यु पर कविता लिखी है। जिसके यहाँ सारा परिदृश्य रात का है—'कि तारो भरे आकाश के बीच/रात का फूल खिला है जिसकी अकेली/साँवली परछाई का सूनापन है'।

ऐसा नहीं कि मृत्यु इस कवि को लुभाती हो, खींचती हो। यह भी नहीं कि जीवन के प्रति कवि का मन उचाट हो गया हो। नहीं, जीवन के प्रति प्रतिपल अनुरक्त इस कवि को मृत्यु ने अपने चक्रव्यूह मे हठात् जकड लिया है। मृत्यु, अकेलापन, खामोशी, इस युवा कवि को कतई स्वीकार नहीं है। वह तो इस घेराव के सामने हतप्रभ है—'बिलकुल जगह-जगह/रह-रह/अभी तो लेकिन अभी तो . '। इस सग्रह की कविताओं का टूटा, अधूरा, अवाक् रह गया वाक्यविन्यास कवि की मन स्थिति का मार्मिक अहसास कराता है। वहीं दूसरी ओर, परस्पर अतर्विरोधी विचार, भावनाएँ, शब्द विपर्यय—'शून्य से बना कोलाहल'... 'मेरी खामोशी मेरे शब्द से परास्त'. .'इतना अकेला/कि जितनी अकेली सृष्टि है'.. आदि जीवन की विडम्बना का तीखा बोध कराती है। विरोधाभास यह, कि इस सग्रह की तमाम कविताओ में मृत्यु, अधकार, नींद, खामोशी, शून्य, अकेलेपन के बीच से हर क्षण जीवन अकुरित होता है। 'जीवन सदा ही वह अतिम कलेवा है जो जीवन दे कर ही खरीदा गया है', अपने-अपने अजनबी का वह वाक्य यहाँ अनायास ही मन में कौंधता है। इन कविताओं को पढकर जो एक भाव मन को ओत-प्रोत करता है, वह है—जीवन के प्रति राग का, उमग का, कि जिस उमग से लता उजाले की ओर अपनी बाँह बढाती है—

'आसमान में मेरे आगमन के बाजे बज रहे हैं।'

अनुक्रम

यह सम्पूर्ण की खामोशी है

तुम्हें अचरज होगा
मैं अगर पेड़ों और फूलों के पीछे
अपना ही सूर्यास्त हूं

न सिर्फ वह
जो कहा नहीं जा सकता
बल्कि वह सब कुछ जो कहा गया
कुछ भी नहीं है
एक घेरा है जिसके हर बिंदु पर
रुकी हुई स्मृति अकेली है

जो तुम्हे कहीं से बुला रहे है
उन्हें नहीं पता वे कहां हैं

तुम अपनी खाली जगह में
अपना इंतजार कर रहे हो

शब्द अपने भीतर नि शब्द
डूब रहा है
यह सम्पूर्ण की खामोशी है।

जीवन कैसा अकस्मात्!

पक्षी नहीं हैं
सुबहे फैली हैं धूप की तरह
सन्नाटे मे दिन जा रहे हैं
दरवाजे का पेड काला
पत्ते मरे हुए चमकते भीषण।

काले पेड के नीचे मैं
सब लोगों के साथ
इस तरह मरता हूँ रात
सुबह चलता फिरता हूँ
दिखता हूँ
हँसने के अलावा बातचीत
करता हूँ पर निरन्तर
पता है मुझे
उस रात सबके साथ मरना अपना

जीवन
कैसा
अकस्मात्!

खुद को याद आ रहा हूँ

मैं अगर कोई भी होता
जाने क्या कैसा।
जो हूँ इसका मुझे
क्या पता चलता।।

घर से निकलता
कि हर तरफ निकलते लोग
और आसमान होता।

मैं कहीं जा रहा होता
या कुछ भी

मैं कुछ और कहता
कभी और

बहुत दूर
न जाने कब कहाँ
जहा मैं हूँ नहीं
खुद को याद आ रहा हूँ।

दूसरी नींद का सपना

किसी का सपना टूटने से
गया मैं
अपने सपने में दूर निकल गया कहीं
सो गया
इस दूसरी नींद का सपना
मेरी तस्वीर की खाली जगह की नींद है
जो पूरी दीवार पर फैली है

उदासी खिड़की से झांकते पर देखा गया
फैलाव है
कि तारो भरे आकाश के नीचे
रात का फूल खिला है जिसकी अकेली
साँवली परछाई का सूनापन है।

अकेली-सी उदासी

सडक दरवाजा खिडकी और आसमान
धरती पर स्थिर साँय-साँय
कोने मे छोटा-सा नीला फूल
हवा में हिलता हुआ स्थिर
चट्टान और थोडी-सी मिट्टी
ईंट और एक घडा
घोडो की विलुप्त टापो की आवाजे धूल पसीना

कोई चलता हुआ रुका-सा
उसकी परछाई धीरे-धीरे उसकी ओर
आती हुई
चाँदनी के धूमिल उजाले मे
दुनिया कितनी निर्दोष!
टिमटिमाते तारो की भगुरता मे कैसी अकेली-सी उदासी।

वहीं से आना है

हर जगह से भाग रहे हैं
उस जगह से भी
जहाँ थे नहीं
अपने एकात से
किसी तरफ को नहीं
किसी भी तरफ को
अपनी परछाइयो से टकराते हुए
लडखडाते
गिर रहे हैं और भाग रहे हैं

इस हलचल की धुधली दूरियो में
एक परछाई हमारी
भागती नहीं है
अँधेरे की चिलक-सी वह रहती है
घोर अधकार मे

वहीं से आना है।

डूबता है

मैं और जीता हूँ
जीवन पीछे
नीम अँधेरे दृश्यों में रह जाता है
मैं कहीं गया
वहाँ से कहीं और गया
इस तरह जाता हूँ
हर तरफ नहीं
दरअसल मैं नहीं जानता
कि मैं जाता कहाँ हूँ।
पीछे जीवन
अँधेरे में तालाब की तरह
डूबता है
सामने अँधेरे में
एक तालाब डूबता है।

कहीं नींद के अंधकार में

उसका चेहरा
उसके चेहरे की झलक में
अभी छिपा है
वहीं कहीं उसकी आँखें

उसका चलना
गुजरा है परछाईं-सा
दीवारें
परदों-सी हिली हैं हवा में
नौकाएँ अँधेरों मे उभरी हैं

अभी वह मेरा मगार
अभी वह
पूरे मगार में मालूम दे

नहीं पता कि वह कहाँ
इसलिए उसे देखा इस तरह
कि वह कहीं भी

अपनी याद-सा
अपने पास सोया
अंधकार था।

जब खुद नहीं था

ऐसे में किस-किस को
बुलाता
जब खुद नहीं था!

क्यों बुलाता
जब डर था
कदम-कदम पर डर से
मरने का डर था
इस तरह छूटता हुआ

मैं कौन जा रहा हूँ
अपनी अजनबी आँखों से दूर!

फिर भी

कुछ भी हो सकता है
सारे घर पास पास अकेले हैं

दूरियों में दूर-दूर मथर गुज़रती मौत
के रास्ते घर-घर से होकर
कोई भी आ सकता है बिना दस्तक
घर में कोई भी किसी के पेट में
छुरे की तरह मार सकता है
एक भयानक आवाज़ हर ओर रही है

इस ओर धरती पर कहीं
फैला अंधकार है
उसमें फैली [illegible]
[illegible] का [illegible] होती है।

मर जाना

मर जाना कैसी अजब बात है
यात्राओं
भीड भरे नगरो मे तुमको
अचानक मिलेगा नहीं
घर में गली में
प्रकट वह अधेरे में होगा नहीं

रहो देखते उम्र भर
वह दिखेगा नहीं

अभी तुम हो तुममें है
तुम न रहोगे तो
पूरी तरह से चला जाएगा वह।

धोखा

अँधेरे धब्बों रोशनी की दरारों से
झरते खतरे रात
सूनी सड़क पर धड़कते
पावों मे उलझाते पाँव
लड़खड़ाते चले

धूप की लपटों में चौराहा
पिघली सड़को पर
दौड़ते घोड़े झाग उगलते गिरे
सींचा आँगन
पूरे शहर में पसारी खाट
पास मे बच्चे का खटोला
पाटी पर औरत का आर्तनाद
न किसी चीज की तुक न तान
फिर भी तुक तान
कुछ लोगों म जान-पहचान
कुछ मे दुआ सलाम।
पुराने बगीचे में बरगद को जगल में होने का धोखा
उसके नीचे अपन को होने का धोखा।

डुबा ले

दु ख नहीं कोई कुछ म्लान
चीजों पर चेहरों पर
एक गहन आत्मा प्रसन्न

विस्तृत आकाश खुला
धरती अनन्त
हो ऐसा! हो ऐसा!

दूर-दूर तक ओझल अधकार
पक्षी अपार पेड
पेड से घनी उसकी छाया
बहुत बडे घेरे मे नाच

नींद
सपनों की महासृष्टि
लहर-सी
आधे डुबा ले।

बिलकुल जगह-जगह

हम नहीं हमारी जगह
कोई और कोई और
कोई और।
बहुत दूर से आते
रह गए पर अभी लगातार।

पास और पास
आते हुए
बिलकुल जगह-जगह
अंधकार।
आर्तनाद भीतर से अकस्मात्
रह-रह।

खोलो दरवाजा
कुछ कहना है
रोज कहना है वही जो
मरता है रोज-रोज
अभी नहीं कोई पहचान
बनता मिटता नक्श वीरान,
अभी तो लेकिन अभी तो
आवाज
भीतर से बाहर तक।

दरवाजा खोलो
पूरे संसार का दरवाजा
बाहर दूर से आते
बाहर हम
पूछ नहीं दस्तक दस्तक।।

जाने से पहले का वक्त

जहा जाना था
वहा न जाने के कारण
यहा हू

जाने से पहले का वक्त
बार-बार घड़ी देखने की ऊब से भी
लम्बी उबासी का गड्ढा

जीवन एक लम्बी उबासी
जिसमें धरती और आसमान के बीच
रुकी उदासी की तुक है

जहा जाना था
वह एक रास्ता था
जिसका अत
एक रास्ते के शुरू में पडता था
जहा एक दरवाजा था
सीढियाँ थीं
घर के भीतरी अँधेरे में
घर था पीली दीवार की धुधली याद से
टिका हुआ भुरभुरा ससार

वहा कोई नहीं था
मेरे पहुचने की खाली जगह थी
जहा मैं अनुपस्थित
अव्यक्त था।

मुडकर देखने पर

मुड़कर देखने पर
बहुत दूर निकल आने की याद अलग है
रहने के दौरान सब कुछ
इतना धीमा है
कि गुजरने का पता नहीं चलता

दो लोग पास बैठे हुए
इतने धीमे गुजरते हैं कि
घूमती हुई धरती पर उनकी जगह
अपनी जगह रह जाती है
तारे चाँद अपनी जगह रह जाते हैं

जीवन बहुत वास्तविक और लम्बा लगता है
उसकी भंगुरता का पता
मुडकर देखने पर चलता है

जीवन कभी किसी की याद सा
किसी के सपने की धुंध सा

मृत्यु का डर अपना है
उसे भूल जाने की खाली जगह में
जिंदगी की घूमधाम है इतनी सूनी
कि बहुत अकेले रह जाने का
दु ख रह जाता है
और खुद रह जाते हैं।

मेरे आगमन के बाजे बज रहे हैं

मुद्दत से एक पेड के नीचे
जाने के लिए चल रहा हूं
यह ऐसा है चलना मेरा
पेड अगर नहीं चला
पेड से दूरी मेरी कम नहीं होगी।

समय मुझे चीरता
चीरता जा रहा है
मैं चल रहा हू
मेरी परछाई छपी है स्याह
एक दरवाजे पर

पेड की तरफ इस तरह चलता हुआ
मैं चल रहा हू

जहा पेड खडा है वहाँ
हरे घनेरे में डूबा
धरती का बूढा चेहरा
कापता मुझे देखता रुका है
आसमान में
मेरे आगमन के बाजे बज रहे हैं।

जीवन अच्छा लगता है

जब तुमने जन्म लिया
हँसमुख लोगों और दरजियों और
बुंदेली स्त्रियों और बोली की
अपनापे भरी आवाज़ों में
जब तुमने जन्म लिया
मैं तो वहाँ नहीं था
और मुझे बिलकुल पता तक नहीं था
कि मै वहाँ नहीं हूँ
मैं इस तरह क्या कुछ भूला रहा
बाद मे कुछ-कुछ के सामने
अपने भूले रहने की याद में
जीवन अच्छा लगता है।

ो अप्रैल को जन्मे सब-कुछ के लिए प्रार्थना

ोस दिन को हम दो अप्रैल कहते हैं
ह तमाम दिनों में से इस कदर बिना चुने
ो अप्रैल है कि हर दिन
ा अप्रैल होने को स्वतंत्र है और हम
तना कम जानते हैं
हस्यों भरे ससार को
क अचरज नहीं अगर पूरा काल एक दिन है
ासे तारीख दो अप्रैल कहते हैं
की तीन सौ चौंसठ तारीखों की प्रार्थना
ी प्रार्थना मे
ो समाहित है कि जैसे काल समूचा
क पल में सन्निहित

हम फैलते हुए आसमान में ममता की चेतना
हम अनन्त की करुणा में शून्य
हम निःशब्द संसार में निर्मम शब्दों की प्रार्थना हैं
हम अपने बारे में इतना कम
और इतना अधिक जानते हैं कि
प्रेम ही बचता है प्रार्थना की जगह में
अकेली एक लहर पूरे समुद्र की जगह बचती है
जब हम भूल जाते हैं जीना
अनन्त अपनी मृत्यु में रहते हैं इतने धुंधले
कि हमारी झलक में बार-बार जन्म लेते हैं संसार!

सारे जन्मों में हमीं जन्म लेकर जन्मों की प्रार्थना गाते हैं
हमीं जाते हैं
हमीं रह जाते हैं

आज दो अप्रैल है और मुझे लग रहा है
इसके अलावा आज कुछ नहीं है

आज के दिन जो कुछ भी जन्मा है
उसकी प्रार्थना ही आज का दिन है

धरती घूम रही है
फूलों से लदी
आसमान में बधावे बज रहे हैं।

वह मेरे बिना साथ है

वह उदासी में
अपनी उदासी छिपाए है
फासला सर झुकाए मेरे और उसके बीच
चल रहा है

उसका चेहरा
ऐंठी हुई हँसी के जड़वत् आकार मे
दरका है
उसकी आँखे बाहर नहीं अपने पीछे कहीं भीतर
दूर कुछ देख रही हैं
उससे आँखें मिलाना
उसकी आँखों की पीठ देखने की ऊब है

उसका होना एक ऐसा सन्नाटा है
जिसमें खामोशी
खामोशी का जाना भी एक आवाज है

मैं बाहर ही रहूँगा

अपनी निस्तब्धता में
जहाँ अकेली बची है वहाँ के रहस्य का
मेरा अधकार है
मैं उसके बिना
वह मेरे बिना साथ है।

आज का सपना

आज कोई खास दिन है
हर लडकी सुदर लगे
हर शख्स प्यारा

धूप रहे भी नहीं भी
हवा कभी चले बहुत कभी हिले धीमे
सडकें उभरें
मकानों से अलग
खिडकियाँ हँसी की तरह
बाहर को खुलें
छतो पर प्यार की पताकाएँ
कितने रग आसमान में
फहरे

आज कोई खास दिन है
घरो के कोनो आतरों का एकान्त
और अधेरा
सासो मे धडके
सीढी कोई उतरे गहरे
सन्नाटे से टिका
कोई स्वर कॉपे बेआवाज
बहुत कोमल बहुत मार्मिक याद का
आभास टीसे दूर

आज कोई खास दिन है
बहुत घास हरी जिस पर पेड हरे
फल कुतरते तोते
गिलहरिया उझकतीं यहा वहा
पतगों के बादल बादलों मे तिरते
धरती रोके घूमना
मानो चूमना चाहे मुखडा किसी का

आज कोई खास दिन है
दूर से उसे देखता
बहुत देर तक जाऊँगा
मेरे शर्ट का रग बदले
मेरे चलने का ढग बदले।

तुम

तुम्हारे बारे में कहना है पर
न शब्द हैं न कहने वाला

कोई उपमा नहीं
तुम्हारा हृदय इतना सुदर है
कि मैं डर जाऊँगा
अपनी मुस्कान में डूबी
विश्वास करती हो जीवन पर
मै थरथराऊँगा

तुम्हारी हँसी
मेरे दु ख मे माँ की तरह
प्रवेश करती है
तुम देख नहीं पाती
मैं हमेशा-हमेशा के लिए
सामने से गुजर जाऊँगा

अजीब यह प्रेम है
जो मुझे याद आता है मैं जब
भूल जाता हूँ
कि कौन हूँ कहाँ।

प्यार के बहुत चेहरे हैं

मैं उसे प्यार करता
यदि वह
खुद वह होती

मैं अपना हृदय खोल देता
यदि वह
अपने भीतर खुल जाती

मैं उसे छूता
यदि वह देह होती
और मेरे हाथ होते मेरे भाव।

मैं उसे प्यार करता
यदि मैं पत्ता या हवा होता
या मैं खुद को नहीं जानता
मैं जब डूब रहा था
वह उभर रही थी
जिस पल उसकी झलक दिखी

मैं कभी कभी डूब रहा हूँ
वह अभी अभी अपने भीतर उभर रही है

मैं उसे प्यार करता
यदि वह जानती
मैं ख़ामोशी की लय मे अकेला उसे प्यार करता हूँ
प्यार के बहुत चेहरे हैं।

अपना अभिनय इतना अच्छा करता हूँ

घर से बाहर निकला
फिर अपने बाहर निकल कर
अपने पीछे-पीछे चलने लगा
पीछे मैं इतने फासले पर छूटता रहा
कि ओझल होने से पहले दिख जाता था

एक दिन
घर लौटने के रास्ते मे ओझल हो गया
ओझल के पीछे कहा जाता
घर लौट आया
दीवारे धुधली पड कर झुक सी गई
सीढ़िया नीचे से ऊपर
ऊपर से नीचे होने लगीं

पर वह घर नहीं लौटा
घर से बाहर निकला
फिर मुझसे बाहर निकल कर चला गया

मैं आईने में देखता हू
वह आईने मे से मुझे नहीं देखता
मैं बार बार लौटता हू
पर वह नहीं लौटता

घर में किसी को शक नहीं है
मूक चीज़ें जानती हैं पर मुझसे पूछती नहीं हैं
कि वह
कहाँ गया और तुम कौन हो !
अपना अभिनय इतना अच्छा करता हू
कि हूबहू लगता हूँ
दरवाजे खुल जाते हैं—
नींद के नीम अँधेरे चलचित्र में जागा हुआ
सूने बिस्तर पर सोता हू।

सबमें खत्म होता हुआ

सब मे हूँ
कहने को हुआ
कि एका मथर अकेला

सब में खत्म होता हुआ
होता हुआ

आते हुए दिन को
जाते हुए दिन के अँधकार में
डूब जाने का डर

नहीं कुछ किया
स्वीकार किया
इस तरह चलता-चलता
गया दृश्य मे
उसे कितनी दूर से देखता हुआ।

सामने कितनी चमक।
सामने कितना अँधकार।।
भीतर से कोई बुलाता है
भीतर कोई है नहीं। है नहीं।।

दिनो बाद

पहचान का वहाँ कोई था नहीं
अनजानों की भीड मे इतने चेहरे
मेरे पास से निकले
उनकी जिदगिया
बस्तियों में बहुत दूर-दूर दीखीं
घर लौटता हुआ
हर बस्ती की सडक पर मैं
लौट रहा था

कितने दिनों बाद लौटा
इतने घरो में एक साथ!

वास्तव में अवास्तविक हूँ

जहाँ से शुरू हुआ हूँ
वहाँ से पहले से है मेरी शुरुआत
जहाँ हुआ हूँ खत्म
वहाँ से आगे चला गया है मेरा सिलसिला

जीवन के विभ्रम की धुँधली याद है
जीवन भूला हुआ अनुक्रम
दोहराता हूँ
भीतर जाता हूँ बाहर
मेरी परछाई फैलती है
धरती से आसमान तक मेरा आभास है
या सृष्टि मेरा रहस्य खोजती है

भीतर
भटक जाता हूँ तो मैं
तारों में छिटक जाता हूँ

मैं
अवास्तविक हूँ
वास्तव में अवास्तविक हूँ।

बातें

बातें करते हुए
बातों के परे हम एक-एक कर के
होते जाते हैं
सोते जाते हैं जैसे सफर में बैठे-बैठे

बातों में होते हैं हम जितना
उतने से कई गुना कहीं और
होते हैं
आखिर को दिखते हैं ना होकर
होते हैं जहाँ वहाँ
दिखते ही नहीं हैं।

जितना भी लौटे

दूर एक जगह
जहाँ बीता हुआ जीवन तमाम
जहाँ से आवाजे लौटती हैं रह-रह
ऐसी जगह कि ज्यादा भीतर जाओ
तो अँधेरा
अँधेरे मे हर तरफ बुझने के निशान
उसके पार
आमने-सामने आईनो में
एक-ही धुँधला दृश्य।

वहाँ से बार-बार लौटे
जितना भी लौटे।।

ये मेरे पागल विचार हैं

यह ससार कुछ नहीं
हर पल और भी ज्यादा उलझती
फैलती जाती उलझन के सिवा जो लगातार
गणितीय स्पष्टता के साथ
जटिल और अतर्विरोधी होता जाता है

यह ससार फैलता हुआ है
लगातार छोटे होते ऐसे केंद्रक में जो
लुप्त होने के बाद आगे लुप्त होता भाग रहा है

इस फैलते ससार को
समझने का कारण समझना
मुश्किल है

इच्छाएँ, चीजें
भावनाएँ
विचार
न कुछ की डूबती ध्वनियाँ हैं
जो न कुछ में फैल रही हैं

एक उदास क्षण की खामोश हसी
अपने निर्वात मे फैलकर इस तरह रह गई है
कि पूरी दीवार एक फोटो है
जिसे अँधेरा देख रहा है।

क्या पता किस बात का दुःख रहा

जो नहीं हुआ
दु ख उसका नहीं
जो हुआ उसका दु ख है

उसका दु ख
घेरे है
जो हो रहा है उसके बाहर घेरे है

बहुत बडी दुनिया मे
एक छोटा-सा ककड हिलकर रह जाता है
जिसकी ओट में
बहुत बडा अपना जीवन गुजरता है

जो बाकी रह गया वही सब-कुछ
जो हुआ उसके बाहर हुआ

कौन मैं क्यों हो गया
कोई क्यों नहीं हुआ
मुझे क्यों पता है कि
वास्तविकता वास्तविक नहीं है।

कुछ नहीं हुआ
न होने को रहा
क्या पता किस बात का दु ख रहा

डूबता हुआ ककड हू
जो लहरें उठ रही हैं उनकी झलक में
मेरे जीवन की कथा है।

मै इतना अधिक क्यों !

अपनी परछाई पर झुका हुआ हूँ परछाई-सा
उतना बाहर नहीं हू
बाहर जितना अपने बाहर है
उतना खाली हूँ बाहर जितना भीतर खाली है
जो कुछ भी गया है खाली करके
बाहर के बाहर कहीं नहीं है
इस तरह एक निस्सीम सीमा के बाहर
सब कुछ का कुछ होना एक सन्नाटा है
जिसमे डूबी ध्वनि
अँधकार मे फैलते हुए अँधकार का फैलाव है
उसी में फैलता हुआ मैं
अपनी परछाईं पर झुकी अपनी पीठ से टिका
घुटनो मे सर दिये
समझ नहीं पा रहा हू प्रयोजन

सारा अस्तित्व मेरे ऊपर झर रहा है
मुझ मे भीतर अतल में विलीन होता हुआ

मैं एक पागल शून्य से बना हुआ खामोश
कोलाहल हू
मेरे आसपास और दूर कहीं दूर
दुनिया जहान एक झूठी कहानी का दुहराव है

एक सपना टूट कर
नींद के तलहीन मैदान की समतल चारपाई के
अँधेरे पर विक्षत जीवन-सा बिखरा है
उसी में से बीनकर इच्छाएँ
अपनी फटी जेबों में ठूँसकर जाना चाहता हूँ
हर दिशा मे
जाने की बद हर दिशा का दरवाजा मैं हू
हर दस्तक मै हूँ
अकेला मैं हूँ अपने सिवा
यह मैं कौन हूँ जो मैं नहीं हूँ
यह किसकी याद है जो इस होने के पार
मेरे होने की तरह भूली हुई काल के निर्जन गड्ढे मे
पडी है!

अपने बारे में इतना गडबडा गया हूँ
कि बहुत-सारे बेमानी शब्दों का जाल बुनती हुई मकडी
मैं हूँ एक खण्डहर के कोने में

दुनिया जहान की याद करता हूँ
तो बार-बार मैं सहसा सामने आ जाता हूँ
अपने से टकरा कर चूर-चूर हो जाता कभी
तो कभी यह सब न होता प्रलाप।

मैं किसी तरह अपने बाहर और भीतर के अलावा
अपने होने का विचार करता हूँ
और भूल जाता हूँ *बाहर-भीतर आने—*
जाने में अपना विचार
क्यों जाने मैं इतना अधिक हूँ अपने लिए
कि और अधिक मरने से डरता हूँ।

यह दरवाज़ा अकेला दूर

उसके दरवाजे से
यहाँ बहुत दूर मेरी दस्तक
बहुत अकेली है
अपनी आवाज में लुप्त

दरवाजे के पीछे
अवाक् सन्नाटे मे कोई प्रतीक्षा नहीं
एक बेमानी ऊब का
बेमानी अँधेरा है जो उसके आकार मे
घुल रहा है।

उसके दरवाजे
बद होने और खुलने के बीच
क्यों इतने स्थिर
उनके पीछे क्या दु ख
कि बाहर का चेहरा उसमें झाक नहीं पाता
चेहरा मिट जाता है अपनी ही जगह
बहुत देर दिखने के बाद
हाथ बहुत दूर रह जाते हैं दरवाजे से

उसके दरवाजे से दूर रह जाने की
रुकी हुई दूरी मे
लौटने और जाने की अपार धुध है
कोई रात का समय है या दिन का
जिसमें रह गया हूँ इस तरह
कि अपने पूरे समय में गुमा हूँ

दुनिया मे मेरा जो चित्र है
उसमें ऊपर की कथा
चित्र के फीके रगो पर धूल सी पडी है
धूल को साफ करने वाली उगलियाँ
दस्तक मे डूब कर निस्पन्द हैं

मैं लौट आया हू
अभी बाकी है लौटना
लगातार लौट रहा हूँ जितना
हर बार उतना रह जाता हूँ

वह दरवाजा अकेला दूर
मेरी नींद के बाहर मुझे दिखता है
मेरे जागने और सोने में इतना फर्क है।

कि मेरा पता चलना मुश्किल है

मैं इस तरह परास्त हो गया हूँ
कि प्रेम को कुछ और कहते-कहते
कुछ और हो गया हूँ सामने
जब एक चेहरा धीरे-धीरे अपने में डूबकर
मेरी ऊब के सन्नाटे मे फैल रहा है
प्रेम को प्रेम कहने की आवाज
जरा जीर्ण मृत्यु के आकार मे परास्त है
मैं इस तरह परास्त हो गया हूँ

मेरी भावनाएँ गहरी
मेरे पाप की तरह अपने आप मरतीं
जीती हैं मेरी नींद के दरिया में
भँवर
मेरी खामोशी मेरे हर शब्द से परास्त
मैं इस तरह परास्त हो गया हूँ
कि मेरा पता चलना मुश्किल है।

मेरे जाने बग़ैर

भागती रेल के बारे में
कहना मुश्किल है कि वह
आ रही है
या जा रही है
दूर-दूर टिमटिमाता अँधेरा
पेडों की धुध में छुपता है
तो कहना मुश्किल है
छुपता है कि दिखता है

तेजी से गुजर गए एक स्टेशन के पार
नामालूम-सी बस्ती की आधी रात
खुली रोशन खिडकी किसी मे
एक चेहरा छूटकर रह गया है

बहुत बाद में कभी
वह चेहरा मेरे चेहरे में से गुजर जाएगा
रेल की आवाज
भीतर कहीं मेरे दूर बहुत-सी छायाओ मे
तेजी से भागती
मुझे अकेला छोड देगी
और कभी मुझे उस किसी ससार का
पता नहीं चलेगा
जो मेरे जाने बग़ैर
मेरे भीतर फैलता रहेगा।

अधूरी हर चीज़

कोई बहुत करीब से गुजरा है
करीब अनन्त दूरी के पार से इतने पास है
कि मैं दूसरी तरफ से अनत के पार से
बहुत पास आ गया हू

एक बिदु मे सारी दूरियों का रहना
सब-कुछ का बहुत पास रहना है
उसी मे बहुत बडे उलझाव की सरलता
जलरग का हिलता हुआ अबोध बिम्ब
सन्नाटे मे घुलता हुआ

कोई कण बिदु वगैरह नहीं
एक सपने की बहती हुई विस्मृति है

यह मैं कौन हू
जो समझ मे न आने वाले खयाल को
बहुत प्यार करता है
और जो समझ मे न आने वाले ढग से
व्यक्त करता है
यह कैसी कल्पना जिसमें विचार का भार
जगह-जगह निरस्त है
जगह-जगह रह जाती है अधूरी
हर चीज

मेरे और मेरे बीच से दोनों तरफ की
दूरियों का करीब गुजरता है।

अधूरी हर चीज़

कोई बहुत करीब से गुजरा है
करीब अनन्त दूरी के पार से इतने पास है
कि मैं दूसरी तरफ से अनत के पार से
बहुत पास आ गया हूँ

एक बिदु मे सारी दूरियों का रहना
सब-कुछ का बहुत पास रहना है
उसी मे बहुत बडे उलझाव की सरलता
जलरग का हिलता हुआ अबोध बिम्ब
सन्नाटे में घुलता हुआ

कोई कण बिदु वगैरह नहीं
एक सपने की बहती हुई विस्मृति है

यह मैं कौन हूँ
जो समझ मे न आने वाले ख़याल को
बहुत प्यार करता है
और जो समझ में न आने वाले ढग से
व्यक्त करता है
यह कैसी कल्पना जिसमें विचार का भार
जगह-जगह निरस्त है
जगह-जगह रह जाती है अधूरी
हर चीज

मेरे और मेरे बीच से दोनो तरफ की
दूरियों का करीब गुजरता है।

देखते ही चित्र वह अपने मे सिमटता है
अपनी तरह अपने मे
लौटता हुआ खुद को अलोप करने की
स्थिरता में ठहरा हुआ

रामकुमार के चित्र मे भीतर
चला जाता हूँ
लैण्डस्केप बहुत अपने और भीतर--
चला जाता है कितने भीतर जाने के बाद
रुकने के असभव सयोग में
कहाँ होता हूँ!
वहा भूलकर रह जाता हूँ ससार

जिदगी की काल कोठरी में
रामकुमार का चित्र दीवार पर टँगा होना चाहिए
उसी में भीतर
इतने बाहर दूर निकल जाऊगा
कि हर हद पर खडा हुआ बेहद
रह जाऊँगा अकेला

मैं रामकुमार के लैण्डस्केप में
रहना चाहता हूँ
दिखना नहीं चाहता
खुद को भूलकर
उसमें याद आना चाहता हूँ।

तस्वीर एक शख़्सियत है
अगर हम अकेले बैठे हैं कमरे में
कई तस्वीरों वाला कमरा
अलग-अलग कोणों से
घेरता है

माँ की तस्वीर
ठिठकी-सी लगती है
वह जैसे
किसी प्रकाश में धुँधली होती जाए

एक दिन हमारे अलबम से
पता नहीं चलता कि माँ
कहाँ चली जाती है
उसकी चिट्ठियाँ और उसका नाम
भाषा में नहीं मिलता

जहाँ गिरेंगे हम
वहाँ वह नहीं होती जब
हम उसे भूल जाते हैं और याद करते हैं

एक दिन
दीवार से उसकी तस्वीर गिर जाती है
दीवारें गिरती हैं और नगर बसते हैं
हम दूर
किसी बस्ती के कोने में
धब्बे की तरह नजर आते हैं
जब
टूटी तस्वीर हमें देखती है
और उठती नहीं है।

तस्वीर एक शख्सियत है
अगर हम अकेले बैठे है कमरे मे
कई तस्वीरो वाला कमरा
अलग-अलग कोणो से
घेरता है

माँ की तस्वीर
ठिठकी-सी लगती है
वह जैसे
किसी प्रकाश मे धुँधली होती जाए

एक दिन हमारे अलबम से
पता नहीं चलता कि माँ
कहाँ चली जाती है
उसकी चिट्ठियाँ और उसका नाम
भाषा में नहीं मिलता

जहाँ गिरेंगे हम
वहाँ वह नहीं होती जब
हम उसे भूल जाते है और याद करते हैं

एक दिन
दीवार से उसकी तस्वीर गिर जाती है
दीवारें गिरती हैं और नगर बसते हैं
हम दूर
किसी बस्ती के कोने में
धब्बे की तरह नजर आते हैं
जब
टूटी तस्वीर हमें देखती है
और उठती नहीं है।

इस घर में कितना जीवन

हम कब से हैं साथ
इस घर में कितना जीवन
गुजारते हुए बचे हम
कहाँ गया सब जो हुआ कभी
हम गये वहाँ
जो मिलते नहीं आईनों मे

घर में नहीं मिलते हम
दरवाजों के पार
गुजरती दस्तक में गुजरते
अकेले-अकेले

पास आते हुए
दूर जा रहे हैं लगातार
हमारे चेहरे

अरे! कोई है! इस घर में!
अरे! कोई है!!

निःशब्द भाषा में

कुछ न कुछ चाहता है बच्चा
                    बनाना
एक शब्द बनाना चाहता है बच्चा
नया
शब्द वह बना रहा होता है कि
उसके शब्द को हिला देती है भाषा
बच्चा नि:शब्द
भाषा में चला जाता है

क्या उसे याद आएगा शब्द
स्मृति में हिला
जब वह रंगमंच पर जाएगा
                    बरसों बाद
भाषा में ढूँढ़ता अपना सच

कौंधेगा वह क्या एक बार।

बनाएगा कुछ या
चला जाएगा बना बनाया
दीर्घ नेपथ्य में
            बच्चा
कि जो चाहता है
बनाना
अभी कुछ न कुछ।

चुप हुआ

जो देखा नहीं
सुना नहीं जाना नहीं वह क्या है
उसकी परछाई
भीतर गलियारे से गुजरी है
अभी गुजरी है

मैं हूँ नहीं
कोई है जिसकी जगह
बैठा उदास

पूरे ससार के भीतर
तेज़ घूमता ससार
मेरे भीतर घूमता हुआ
अँधेरे में गया है अभी गया है

गये दिनों और आते दिनों के बीच
नहीं दोनों तरफ के
अनन्त की यादों से
चुप हुआ

कुछ ऐसा जान गया
जो मैं जानता नहीं हूँ
मेरा कोई आयतन नहीं
मैं हर आयतन मे जा रहा हूँ
उसमें से आ रहा हूँ
अभी आ रहा हूँ।

अब घर चलना चाहिए

बहुत रात तक मैं सड़क पर रहता था
शक नहीं करता था न डरता था
मैं थके हुए लोगों से डरता नहीं था
उनके पस्त देह पर झूलते चीथड़ों
लड़खड़ाते कदमों उनकी घिसटती परछाइयों
में रह जाता था बेशुमार।

नींद में झुके हुए मकानों के बुत
गलियों को सूना करते थे।

कहीं कोई खिडकी खुलती बद हो जाती
कोई आवाज
सन्नाटे मे डूबती हुई आती
किसी दरीचे से रोशनी का शहतीर गिरता
कोई शराबी गिर कर उठता
सामने
झूमता हुआ
घूरता
बडबडाता हुआ
बहुत बेचारगी में सना अकेला छूटा रह गया-सा
अपना घर भूला
उसे उसके घर पहुँचाता था

आदत से
बार-बार अँधेरे में कहता था
अब घर चलना चाहिए
घर के भीतर घर ढह गया
मैं रहते-रहते थक गया हूँ
खिडकियों को दीवारों ने मूँद लिया
दरवाजों को निगल गई दीवारें
ताबूत में रहने का आदी नहीं हूँ
रहन का आदी हूँ
रहते-रहते थक गया हूँ

जनम रहा है जो भीतर अँधेरे में
उसे बाहर अँधेरे में मार रहा हूँ
तनाव मेरे
उसी मृत्यु की छाया हैं।

प्रिय 'म' सदा खुश रहो

मेरे पडोस मे सयत ख़ामोशी
और खुली हँसी में वद
वहुत वडा दु ख रहता है
उसकी परछाई मेरी आत्मा
और मेरे दिन-रात के अँधकार पर
साँस लेती हुई फैली है
उस दु ख का स्पदन
मेरे पूरे जीवन के झझावात की
स्थिर फोटू मे हिलता है
मेरी भावनाएँ उसी दु ख के
अपार विदु मे घूमती हैं बेचैन
मेरी विवशता
उसकी तरफ पीठ किए धीरे-धीरे
सिसकती है या हँसती है
दूर जाती हुई

मैं किसी भूली हुई प्रार्थना के लिए
व्याकुल हूँ
ऐसी वानी के लिए जो उस दु ख को
अपने पूरे आकाश में पसार दे

मेरी आत्मा में एक पीली पत्ती
झरती हुई इतनी स्थिर है कि
अतल है जहाँ वह

गिरती हुई रुकी मुझे पुकारती है बेआवाज
मैं एक विराट सन्नाटे मे होने वाली
किसी आवाज का अत हूँ
मैं अपने पडोस मे रहता हू
धरती के पडोस मे फैले तारो मे
पीला धुँधला दु ख वह
दिखता है सारी रात
मेरी नींद और मेरे बीच
हर घडी टूटता है एक तारा।

मैं कैसे करूँ प्रार्थना कैसी।
कौन ईश्वर मुझे देगा उतनी सरल भाषा कि
दु ख जिस दरवाजे की दस्तक
दे रहा है
वह दरवाजा
भावभरी मथर एकाग्रता से खुले और बाहर
खडा दु ख हँसी के पीछे से झरता हुआ
भुरभुरी मिट्टी-सा फैल जाए
क्यारियों और गमलों में

मै जो दु ख देख रहा हूँ
डरता हूँ
वह इतने भीतर अपने न चला जाए
कि बाहर जिन्दगी
बहुत सूनी हो और
जीने का हर प्रकार इतना पथरा जाए
कि एक आत्मा अपने भीतर
हजार टुकडो मे
कुतुबनुमा का अँधेरा झिलमिल बन जाए।

बहुत तेज रोशनी में फैला अँधेरा
दिखाई न दे

इतना बिखर जाए
कि खुद मे पूरा ढूँढ़ने में पूरा खो जाए!!

मैं रो नहीं रहा हू
यह सोच रहा हूँ कि जो मुस्कान
मैने
तुम्हारे चेहरे पर देखी थी
और मैंने जिसे
अपनी इच्छा का आकार माना था
क्या वह मुस्कान
खुद से विदा हो गई है!
क्या मैं उम्मीद के
अँधेरे में ऐसे बैठा हूँ कि
बहुत रोशनी में दिख रहा हूँ

कविता भी नहीं कह पाई
अगर
तो मै और क्या कह
पाऊँगा अकेला!

मैं प्रतीक्षा का चित्र हूँ
और तुम्हारी हर दीवार पर
टँगा हूँ
तुम्हारी मुस्कान की आवाज की
प्रतीक्षा का ऐसा चित्र
जो कमरे में अकेला बद है फिलहाल
तुम दरवाजा खोले बिना
कहीं की सीढियां उतर रहे हो
मैं कहीं का कहीं हो गया हूँ।

देना

जिसने मेरा घर जलाया
उसे इतना बडा घर
देना कि बाहर निकलने को चले
पर निकल न पाए

जिसने मुझे मारा
उसे सब देना
मृत्यु न देना

जिसने मेरी रोटी छीनी
उसे रोटियो के समुद्र में फेकना
और तूफान उठाना

जिनसे मैं नहीं मिला
उनसे मिलवाना
मुझे इतनी दूर छोड आना
कि बराबर ससार मे आता रहूँ

अगली बार
इतना प्रेम देना
कि कह सकू   प्रेम करता हूँ
और वह मेरे सामने हो।

सकुशल अपार

मेरे अनेक दुश्मन
पर पता नहीं उन्हे यह बात।

जब उन्हे मारता हू
उन्हें पता नहीं चलता कि
मारे जा चुके हैं
मैं उनका कातिल
और वे सामने से गुजरते हैं
सकुशल अपार
मैं उनकी दुनिया में छुप गया हूँ

इस तरह बचा रहा
मैंने भी खून किया कि कोई
मेरे बारे में सोच तक नहीं सकता

मैं जब मरूगा
मरना मेरे लिए वही होगा जिससे
बचने के लिए मैंने
जीवन भर इतनी हत्याएँ की।

निर्मल वर्मा की किताबें

जैसे-जैसे उम्र बढ़ रही है
किताबें मेरे पास कम हो रही हैं
बार-बार पढ़ने वाली कुछ बचेंगी जो
बहुत बाद में मुझे अकेला करेंगी अपने साथ
इतना अकेला
कि जितनी अकेली यह सृष्टि है
शून्य में फैलती हुई

निर्मल वर्मा की किताबें
बहुत पास रखी हैं
उनकी जितनी किताबें उनके अलावा
मेरे अनुभव में
उनकी यह कौन-सी किताब है।
रात में बहुत ऊपर जाता अमूर्त।।
किसी कोण पर चाँदनी में झलकता भ्रम।।।
मेरे अनुभव में
उनकी कौन-सी किताब
उनकी किताबों के पास अनुपस्थित खाली जगह में
बहुत पास और बहुत दूर होने से
इतनी धुँधली
कि अनन्त में विलुप्त कहीं मौन प्रार्थना।
जिसके शब्द आत्मा से अगम्य
ईश्वर से परिपूर्ण।

मेरी बेटी जब भी घर आती है
निर्मल वर्मा की किताबें मांगती है
उनकी सारी किताबें उसे दे चुका हूँ
पर उसे
हर बार शक है किताब कोई मैं उनकी

छिपाए हूँ
उसे यह भी शक है कि मे एक किताब पढ चुका हूँ
उसका यह दूसरा शक मुझे कभी
सच लगता है
जन्म जन्मान्तरों की भीड-सा कुछ याद आता है
विस्मृति मे दूर तक
खिचती चली जाती है रेख
उमडती व्यथा की मुस्कान अँधेरे पर फैल जाती है
सन्नाटे की आवाज आती है

एक दिन मेरी बेटी जब
निर्मल वर्मा की किताबो के पास अकेली बचेगी
तो नहीं है उनकी जो किताब
उसकी खाली जगह में लेगी साँस
याद आएगा उसे अव्यक्त
छुएगी उँगलियों से शून्य
अँधेरे की पीठ से टिकी एकटक देखेगी तारे
मेरे पास आकर चुपचाप बैठ जाएगी
माँगेगी नहीं वह किताब
जो मैं उसे कभी दे नहीं पाया

अँधेरे मे
रात का लिहाफ ओढे
नींद के पास लेटा हूँ
निर्मल वर्मा की किताबो पर
ठहरा है
धूप का एक टुकडा।

करें क्या हम!

जो मारे गए उनकी गिनती की गई
गिनती का नहीं कोई अत
हर गिनती अगली के बाद मामूली
एक लाश नहीं है सामने झूलती
आँखों में
मरे हुओं का ढेर सामने नहीं है
वे कहीं मारे गए लोग
हम वहाँ नहीं
हम वहाँ कभी नहीं थे
जहाँ लोग मारे गए

हम थिएटर में
मिट्टी की चिडिया का शोक गीत गाते
हम बुखार में
जिंदगी की अँधेरी दीवारों के भीतर अकेले
ससार में अकेले-अकेले
सुबह तनिक उठकर अख़बार पढ़ते
रात में सुनते आवाज नींद में रुककर
हम क्या करें!
क्या करें हम!

इस तरह सोते जागते हैं
हमारी रातों के भीतर दिन भागते हैं।

स्थिति

अँधकार में दीवार पर ढहती दीवारों के आकार
बाहर का सन्नाटा समदरो की तरह
हिलता भीतर
नींद   थकी निढाल परछाइयों को चीरती परछाई

बाहर उदास हुआ जगह-जगह रुकी हुई
चौंकी
कि आसमान अभी अपने पीछे अचानक
कुछ देखता हुआ
नहीं चाँद कहीं तारे नहीं
उनकी जगह अँधेरे के छेद
कि धरती पर टपकती मृत्यु!

ठिठके हुए पाँव दरवाजो के पीछे-लौटते हुए
दीवारों से चेहरे सटाए खडे सारी रात
मेलों के निशान पूरे शरीर से
रेत की तरह झरते
उडते पथराये आकारो के भीतर
पक्षियो के आकार
तलघर मे घिसटती आवाज
कोई पानी तक पहुँचने से पहले मर न जाए।

कितना भी भागे

लडखडाते हुए कितना भी हम भागे
गिरे अपने ऊपर गिरे
दरवाजों के आर पार

झरा हमारे ऊपर दीवारों का पलस्तर
मकडी के जालो मे लिपटी खिडकी गिरी एक बद
जिसकी दरार मे नीला आसमान

जगल की लकीर
आँख की किरोच
चूल्हा गिरा हमारे ऊपर
ठडी राख और आँचल की गध

लडखडाते हुए कितना भी हम भागे
लडाई के मैदानो में दूर-दूर धँसे रह गए,
हमारे कोने-तिकोने
हमसे टकराई हमारी परछाई
(चिंगारी और आग)
फूस के जलते हुए गाँव गिरे हमारे ऊपर
अटारियाँ
सूने प्रेम गीत
पथराये चुम्बन गिरे

चाँद की धूमिल देहरी पर बैठी एक स्त्री
रोती रही रात भर
निद्रित ससार पर गिरी
आँसू की बूँद
एक बच्चा कहीं चौंका नींद मे

भटके देर रात लौटे पछी का घोंसला
पेड के नीचे बिखरा मिला
रोते हुए कुत्तों का झुण्ड जलता रहा
अलाव की जगह
सितारे सारे टूट कर गिरे एक साथ।

और हम हैं क्या

हम उनसे क्या कहते!
उन्हें नहीं सुनना
वार करके मरता छोड
भागते हुए उन लोगों से
हम क्या कहते!

और हम हैं क्या!
मुहल्ले में एक औरत को
रोज रोना और हमें
रेडियो पर गाने सुनना
और हम हैं क्या
जो किसी चीज के लिए जान
दे नहीं सकते!

हम उनकी जान लेने वाली
भीड के इन्तजार मे
सडक किनारे खडे मिले।

तुम आना

वीरान रोशनी में झुके पेड़ो की
उदास वीरानियाँ मिलेंगी
जहा अँधेरो में
दूर गुम पगडंडियाँ
सितारों की प्राचीन झिलमिल के नीचे
मैं जब
टूटा घिरा अकेला
दूर छूटा हुआ
निढाल झुका बुदबुदाऊँगा
मैं जब
हतप्रभ जीवन के झुरमुटे मे
ढहता हुआ
माथा शून्य पर टिकाए

तुम आना
और ऊगलियो से
मिट्टी हटाना कि नीचे मेरी पीठ है
कि मेरी आँखे हैं
धूल मे बिखरीं

तुम आना
जिसे यह भी नहीं पता
कि मैं आया था
तुम आना!

आजकल

खोखली लिखन याद
टहलती अँधेरे का कम्बल डाले
हम दूर उसकी तरह
लगते हैं

लौटने के लिए
पीछे देखते हैं
आगे वह नहीं रह जाता
जो अभी-अभी दिखा था

कोई लौट नहीं सकता
पीछे जगह-जगह रह जाता है
दिखता हुआ
इस तरह एक लकीर नहीं
हर तरफ
आकाश से टिमटिमाती धरती पर एक साथ

घुटनों में गरदन डाले
एक उदासीन पीठ पर
मेला लगा है
जहाँ अभी और तम्बू गड रहे हैं।

होना था

यहाँ वह कंधा होना था
जहाँ मेरा हाथ खाली
झूल गया है हवा में

कि जिस पर रखता सर
और आँखें बंद कर लेता
मुझे राहत चाहिए
ऐसी कि भूल जाऊँ
लौटने के लिए मैं दूर जाऊँ हर बार

मुझे आँखों से देखो पूरा
कि रह न जाऊँ
मुझे ऐसे भूलो
कि मैं याद करता रहूँ

मेरे लिए दरवाज़ा खोलो
मेरी दस्तक से पहले

मुझे पहचानो
कि शीशे में अभी मेरा चेहरा नहीं उभरा
कि मैं अभी
तुम्हारे सपनों के बाहर
टहलता हूँ सड़क पर अकेला

यहाँ वह कंधा होना था
जहाँ अँधकार की पीठ पर मेरा हाथ
काँपता है बेपनाह।

कोई जन्म होगा कभी
मैं जब
तुमसे कहूँगा
तुम्हारे वृत्त में नाचूँगा
रहूँगा।

पानी की तरफ

यहां बहुत पानी है
जहां लोग नहीं हैं
प्यास नहीं है

यहां बहुत प्यास है
यहां पानी नहीं है जिसमें
लोग नहा रहे हैं

मैं इस प्यास से घबरा गया हूं
सारे लोग घबरा कर
पानी की तरफ भाग रहे हैं

पानी नहीं है
दूर लोग नहाते हुए बचे हैं
दौड़ते हुए लोग
दौड़ रहे हैं ऊपर धूप की रेत
गिर रही है
सूरज धरती से टकराने वाला है।

पता नहीं चला

नदी का जाना
पता नहीं चला

किनारे के मन्दिर में भगवान
बस्ती में लोग
आकाश में तारे
घोंसले में पक्षी रहे आ
जब नदी में नदी नहीं रही
रात मे रात
सन्नाटे में सन्नाटा रहा

सुबह सूरज ने देखा
लोगों ने
दोनों किनारे
एक-दूसरे में जाकर उसे
ढूढते रहे खामोश।

पीछे शहर रात भर बिखरा पडा रहता है

सडकों पर चलते हुए अब ऐसा नहीं होता
कि धीरे-धीरे बहता हुआ दृश्य
हल्की जमी हुई बारिश मे
धुँधला बहुत अच्छा लगता था
यह फोटो-फिल्म-सा हिला-दरका हुआ जगह-जगह
खुद मे धसता हुआ
इसके धुँधलको में
जमानों के उमडते हुए दृश्य गूँजे
बेआवाज गूजो का सैलाब
चकरी में घूमता हुआ सिर मे
एक पल को आता है

इस शहर में
जो मकडी कीडे को
अपने जाल मे लपेटती है
वही मकडी उसी कीडे के भीतर से
निकलती है
शहर ऐसे कीडो से भरा है

यहाँ का हर कुत्ता दूसरे से लडता है
पूँछ हिलाने के बाद वह लडेगा जरूर
यहाँ के चूहे चूहेदानी मे रखी चीजें
खा जाते हैं
फँसते नहीं हैं
तिस पर यहाँ छिपकलियाँ
मकडी के भीतर से निकलती हैं
जाल में लिपटे कीडों को मकडी समेत खा जाती हैं

यहाँ खण्डहरों से लगे मकान
और बूढ़े घबराए हुए हैं
बूढ़े पार्कों मे कम मिलते हैं
घरों में
पीछे से झाकते हैं
उनके चश्मो पर पड़ती चमक के पीछे
उनकी आँखें नहीं दिखतीं
वे किसी को सलामत देखकर उसे दूर से टटोलते हैं

औरतें हैं
दिन रात घर बाहर खटती हुई बेजार
कहीं लूट की कमाई से निहाल
अकेली घबराई हुई माँएँ
दरवाजों खिडकियों के पास
उनके चेहरों के अक्स
दीवारों में उनकी साँसें
जो घर के सन्नाटे में फैली हैं

सडकों पर मसूबे लालच और लाचारियाँ
एक दूसरे से रगड खाते हैं
आवाजों का कर्कश अलगाव
हर दर दुकान से फूटते सगीत
और सडक से उडती धूल के बीच ठहरा है
सारी रात शोर की गर्द
हवा में गिरती है जो सन्नाटे के गुम्बद का
बोझ मन पर डालती हैं

यहा हर दिन गुजरे दिन की सगीन याद है
जमानों की याद
आसमान के रगो में चली गई है
दूर वह छतों के ऊपर पतगो के पीछे हिलती हे
अँधेरे मे अँधेरे की पतगो का

तिरता हुआ अँधकार है
इस शहर का आसमान कुदरती पास है
दूर जाती हुई गति मे उसकी स्थिरता
उसके भीतर को जाती है
वह दूर जाते हुए पास का दृश्य है
जब तारे टिमटिमाते है तो वे
अनजान जमानो के एक साथ फैलान की बत्तिया है
जिनमें चाँद अपनी कलाए दिखाता है
शहर पर झरती हुई चाँदनी की धूल
हवा की कालिख पोंछती हुई गिरती है
छत पर बहुत पुरानी दरी की तरह बिछी है
उस पर रखा हुआ गिलास
देर से अकेला है
उस पर एक मक्खी उड रही है
जो उड चुकी और अभी-अभी जा रही है

इस शहर मे उदास लोगो के चेहरे
और शराबियों की चाल
रात की पत्थर की आख में जडी भूत है
सडको के किनारे सोते हुए
ग्रामीण आदिवासी औरत मर्द बच्चे
मुरझाई हुई नींद मे धुधले
अस्पतालो से होकर गुजरती लाश के परिजन
कहीं किसी चीख के बाद
खिचा हुआ सन्नाटा

पर लौटते लोगो के धुँधले अक्स
बालकनियो खिडकियों और खुलते दरवाजो से गिरती रोशनी मे
झलकते है
किसी दस्तक की आवाज देर तक आती रह जाती है
कहीं कोई जन्म लेता है अनजान

कहीं कोई पौधा निकल आता है
यहा प्रेमी जोडे है
कोई और जीवन जीने से पहले का
उनका यह छोटा-सा जीवन है
धूप मे उनकी तितली है
उनके फूल खिले हैं

आत्महत्या से पहले की चुप्पी और विलगाव वाले चेहरे
छतो से झाकते है यहाँ मुँडेरो से
बिल्लियाँ फिसलती हैं
सडको पर गिरती है जोर-जोर से रोती हैं
यहा कुछ हत्यारों के डर से
कोई भी बन सकता है हत्यारा
जो नहीं मार सकते
वे स्तम्भित चेहरे
शहर मे जहाँ-तहाँ गडे है

आते हुए खतरो की चेतावनी से पहले
खतरे आ जाते हैं
उनसे पहले शहर में एक गूगा घण्टा बजता है
जिससे घरों मे दरारें पडती हैं
फिर नगर के द्वार खोल दिये जाते हैं
और वे सब कुछ रौंदते हुए
नींद में गुजर जाते हैं
पीछे शहर रात भर बिखरा पडा रहता है
मैं इसी शहर में छिपा हूँ
यहाँ कर्ज के बोझ से चरमराती हुई
भूख में जगी हुई नींदे है जिनमें अँधेरे हिलते हैं
तो उनके जबडों में हमी हिलती है।
यहाँ अपमान से घर लौटे
आदमियों के बहुत घर हैं।

मैं चला जाऊंगा

इतने खेद में जीने से अच्छा है
कि मैं चला जाऊँगा
बहुत दूर की अनजान बस्ती में
अकेला खड़ा सड़क के किनारे
मैं
इतना भिन्न हो जाऊंगा कि आईने की शक्ल
चौंक जाएगी

पहली बार अपने कंधे पर हाथ रखकर
एक अजनबी के साथ चलूँगा
पहली बार होगा कि आते जाते खुद से
जरा इधर-उधर रह जाऊंगा
ऐसे सोऊँगा
जैसे अपने बगल में सोया हूँ
बोलने के कुछ देर बाद सुनाई देगी खुद की आवाज
खामोशी मे और गहरी खामोशी का अंत करण होगा
मैं ही दस्तक दूंगा
मैं ही दरवाजा खोलूँगा
बिलकुल अपने सामने खड़ा-खड़ा अपने मे खो गया

तो दूर
एक दूसरे में अंतरित होते निराकार का
दृश्य होगा
पेड के पीछे से गाता हुआ निकलेगा चाँद
और मैं
पुरानी फिल्मों की पोशाक मे टाकीज के परदे पर उभरूँगा
दीवार के फटे पोस्टर मे उसका चेहरा
बिंदिया सहित होगा
भीतर गूँजता हुआ गाना निंदिया सहित होगा
वहाँ कोई मेरे ऊपर हँसेगा नहीं
किसी को पता ही नहीं होगा मेरा इतिहास
किसी को पता ही नहीं होगा कि मैं अपनी कल्पना हूँ

चीन की लडाई से पहले मैं
बम्बइया फिल्म का दीवाना हो जाऊँगा
सडसठ तक बहुत खुशी में खुशी का
दु ख में उदासी का गाना गाऊँगा
मुझे पता ही नहीं होगा कि सारी फिल्मों के अंत
यक-ब-यक बदल जाएँगे
मुझे पता ही नहीं होगा कि मैं
हाथ पाँव पटक कर रह जाऊँगा
घर में देश कुर्क होगा और मेरा परचम
नीलाम हो जाएगा
मुझे पता ही नहीं होगा कि मैं
हजारो मरे हुए सैनिकों और करोडो गरीबों के ऊपर से
गुजरता हुआ
इतना बूढा हो जाऊँगा कि मेरे बच्चे
मेरे जमाने की फिल्मों का मजाक बनाएँगे
और मैं
आधी रात को धीमी आवाज करके टी. वी. के चैनल बदलूगा।

संग्रह की 'कहीं नींद के अंधकार में', 'मैं एक दिन', 'दो अप्रैल', 'जाने से पहले का वक्त', 'दूसरी नींद का सपना' जैसी 'वैयक्तिक' रचनाओं को एक साथ इसलिए संभव करती है कि उनमें कोई वास्तविक भेद नहीं है।

नवीन सागर जन्म का, जीवन का और आगमन का उत्सव मनाते हैं इसलिए व्यापक विस्मरण के इस दौर में वे स्मृति को इस हद तक बचाकर रखते हैं कि अंधकार में 'अपनी याद सा अपने पास लौट आते हैं और यह कहने का साहस करते हैं कि 'बहुत दूर/न जाने कब कहाँ/जहाँ मैं नहीं हूँ/खुद को याद आ रहा हूँ।' ऐसे अनेक दृश्य उनकी कविताओं में जगह जगह चमकते दिखते हैं। यह अकारण नहीं है कि 'रामकुमार के लैंडस्केप में रहना है' नाम की एक अद्‌भुत कविता में कवि 'मैं जब भूल जाता हूँ/भाग जाता हूँ लौटता हुआ/पहचान में नहीं आता' तो प्रसिद्ध चित्रकार रामकुमार के भू दृश्यों के भीतर चला जाता है जो दरअस्ल स्मृति दृश्य ही हैं। रामकुमार की कृतियों को वे अपने इतने निकट पाते हैं कि 'जिन्दगी की कालकोठरी में/रामकुमार का चित्र दीवार पर टंगा होना चाहिए/उसी के भीतर/इतने बाहर निकल जाऊंगा।' यहाँ हम याद कर सकते हैं कि नवीन सागर अच्छे चित्रकार भी थे, अनेक कलाकारों से उनकी घनिष्ठता थी और उनकी कविता में जो गहरी चित्रमयता मिलती है वह उनके दृश्यात्मक भावबोध का परिणाम है। अकेली सी उदासी' जैसी कुछ कविताएँ सिर्फ दृश्य रचती हैं और उसी को एक 'निर्दोष' दुनिया का वक्तव्य बना लेती हैं। नवीन सागर की इस चित्रमयता में हम अपने सबसे ज्यादा चित्रमय कवि शमशेरबहादुर सिंह का स्मरण भी कर सकते हैं।

अब जब स्मृति ही नवीन सागर का घर है और उसी में रहते और वहीं से आते हैं तो उनके मित्र परिचित पाठक 'जब खुद नहीं था', का शायद 'जब खुद था' की तरह महसूस करते रहेंगे।

मंगलेश डबराल